### अनुवाद

जो सब प्रकार की सांसारिक आसक्ति और मिथ्या अहंकार से मुक्त है, जो धृति और दृढ़ उत्साह से युक्त है तथा कर्म की सिद्धि-असिद्धि में उदासीन है, वह कर्ता सात्त्विक है।।२६।।

### तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित पुरुष प्रकृति के गुणों से सदा परे रहता है। उसे कर्तव्य-कर्म से किसी फल की आशा नहीं होती, क्योंकि वह मिथ्या अहंकार और गर्व से ऊपर उठ चुका है। फिर भी वह कार्य-पूर्ति के लिए उत्साह से युक्त रहता है। मार्ग में आने वाले दुःखों से नहीं घबराता; दृढ़ धैर्यपूर्वक सब सहन करता हुआ सदा-सर्वदा उल्लसित रहता है। उसे सिद्धि-असिद्धि की चिन्ता नहीं होती, इसलिए सुख-दुःख में समभाव रखता है। ऐसा कर्ता सात्त्विक है।

**रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।**
**हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः।।२७।।**

**रागी**=अति आसक्त; **कर्मफलप्रेप्सुः**=कर्मफल की इच्छा वाला; **लुब्धः**=विषयों का लोभी; **हिंसात्मकः**=दूसरों को पीड़ा देने के स्वभाव वाला; **अशुचिः**=अपवित्र; **हर्षशोकान्वितः**=हर्ष-शोक से युक्त; **कर्ता**=कर्ता; **राजसः**=राजस; **परिकीर्तितः**=कहा गया है।

### अनुवाद

परन्तु जो अपने कर्मफल में आसक्त है, उन्हें भोगना चाहता है और जो लोभी, दूसरों से द्वेष करने वाला, अपवित्र, हर्ष-शोक से चलायमान है, वह कर्ता राजस कहा गया है।।२७।।

### तात्पर्य

किसी कर्म अथवा कर्मफल में आसक्ति का कारण स्त्री, पुत्र, घर, आदि विषयों में प्रगाढ़ आसक्ति का होना है। विषयासक्त मनुष्य में जीवन को ऊपर उठाने की कोई अभिलाषा नहीं होती। वह तो केवल इस बात में रुचि रखता है कि किस प्रकार इस प्राकृत-जगत् को भौतिक रूप से अधिक से अधिक सुखद बनाया जाय। ऐसा मनुष्य प्रायः बड़ा लोभी होता है और समझता है कि उसे प्राप्त सब भोग स्थिर हैं, जैसे उनका कभी नाश ही नहीं होगा; दूसरों से द्वेष करता है और इन्द्रियतृप्ति के लिए कुछ भी पाप करने को सन्नद्ध रहता है। इन अवगुणों के रहते वह निश्चित रूप से अपवित्र है। वह इस बात की चिन्ता नही करता कि उसकी आय शुद्ध है अथवा अशुद्ध। कार्य में सफल होने पर उसे बड़ा हर्ष होता है और असफल रह जाने पर वह दुःख-सागर में निमग्न हो जाता है। इस प्रकार का कर्ता राजस है।

**अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः।**
**विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते।।२८।।**